MSB
Class X
Hindi

Time: 3 hrs **Total Marks: 80**

सूचनाएँ:

1. सूचना के अनुसार गद्य, पद्य तथा पूरक पठन की आकलन कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।
2. सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग करें।
3. रचना विभाग तथा व्याकरण विभाग में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।
4. शुद्ध, स्पष्ट एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

विभाग 1 : गद्य [20]

प्रश्न 1.

(अ) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए। [8]

1) संजाल पूर्ण कीजिए। [2]

परिच्छेद से प्राप्त ज्ञानसिंह संबंधी जानकारी
- मवेशी पालने का शौक
- दयालू
- नौकरी से अवकाशप्राप्त
- स्वार्थहीन

ज्ञान सिंह को मवेशी पालने का बहुत शौक था। प्राय: उसके घर के दरवाजे पर भैंस या गाय बँधी रहती। तीन बरस पहले उसने एक जर्सी गाय खरीदी

थी। उसका नाम लक्ष्मी रखा था। अधेड़ उम्र की लक्ष्मी इतना दूध दे देती थी कि उससे घर की जरुरत पूरी हो जाने के बाद भी बाकि दूध गली के कुछ घरों में चला जाता। दूध बेचना ज्ञान सिंह का धंधा नहीं था। केवल गाय को चारा और दर्रा आदि लेने के लिए कुछ पैसे जुटा लेता था। नौकरी से अवकाश के बाद ज्ञान सिंह को कंपनी का वह मकान खाली करना था। समस्या थी तो लक्ष्मी को किसी हालत में बेच नहीं सकता था। उसे अपने साथ ले जाना भी संभव नहीं था। जब अवकाश में दस-पंद्रह दिन रह गए तो करामात अली से कहा- "मियाँ! अगर लक्ष्मी को तुम्हें सौंप दूँ तो क्या तुम उसे स्वीकार करोगे...?"

2) कारण लिखिए: [2]

i. ज्ञान सिंह के दूध बेचने का कौन-सा उद्देश्य था?

उत्तर : ज्ञान सिंह के दूध बेचने का उद्देश्य पैसे कमाना नहीं था बल्कि केवल गाय को चारा और दर्रा आदि लेने के लिए कुछ पैसे जुटाना था।

ii. ज्ञान सिंह की लक्ष्मी को लेकर क्या समस्याएँ थी?

उत्तर : अवकाश प्राप्त करने के बाद ज्ञान सिंह को कंपनी वाला मकान छोड़ना था। पशु-प्रेमी होने के कारण वह किसी भी कीमत पर लक्ष्मी को बेच नहीं सकता था और उसे साथ ले जाना भी संभव नहीं था।

3) 'सेवक' शब्द का पर्यायवाची और विलोम शब्द लिखें। [2]

उत्तर : पर्यायवाची - सेवक = नौकर, अनुचर, दास, चाकर

विलोम - सेवक x स्वामी

4) पालतू जानवरों के साथ किये जाने वाले सौहार्दपूर्ण व्यवहार के बारे में अपने विचार लिखें। [2]

उत्तर : जानवरों में भी जान होती है। उन्हें भी मनुष्य की तरह ही शारीरिक जरूरतें जैसे भूख-प्यास आदि लगती है। पालतू जानवर तो अपने मालिक से केवल उचित देखभाल और प्यार की अपेक्षा करते हैं। यदि घर में कोई भी पालतू जानवर है तो उसे घर के सदस्य की तरह ही देखभाल करनी चाहिए। उसके खाने-पीने से लेकर उसकी औषधियों तक सभी बातों का ध्यान रखना चाहिए। जैसे हम घर के छोटे सदस्यों के साथ खेलते हैं, समय व्यतीत करते हैं ठीक उसी प्रकार से हमें अपने घर के पालतू जानवर के साथ भी करना चाहिए।

(आ) परिच्छेद को पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए। [8]

1) संजाल पूर्ण कीजिए। [2]

सोनाबाई के बच्चों की शरारतें
- एक कुर्सी पर चढ़ा तो दूसरा मेज पर।
- छोटी बेटी का दवाई की शीशी के साथ डांस
- दवाई की शीशी तोड़ना
- रेती की थैली पर बॉक्सिंग की प्रैक्टिस कर

बच्चे खेलने लगे। एक कुर्सी पर चढ़ा तो दूसरा मेज पर। सोनाबाई की छोटी लड़की दवा की शीशी लेकर कथकली डांस करने लगी। रप-रप की आवाज ने मेरा ध्यान बँटाया। क्या देखता हूँ कि सोनाबाई का एक लड़का मेरी टांग के साथ लटक रही रेती की थैली पर बॉक्सिंग की प्रैक्टिस कर रहा है। मैं इसके पहले उसे मना करता, सोनाबाई की लड़की ने दवा की शीशी पटक दी।

सोनाबाई ने एक पल लड़की को घूरा, फिर हँसते हुए बोली - "भैया, पेड़े खिलाओ, दवा का गिरना शुभ होता है। दवा गई समझो बीमारी गई।" इसके दो घंटों बाद सोनाबाई गई, यह कहकर कि फिर आऊँगी। मैं भीतर तक काँप गया।

2) उत्तर दें: [2]

i) सोनाबाई की छोटी लड़की क्या करने लगी?

उत्तर : सोनाबाई की छोटी लड़की लेखक की दवाई की शीशी लेकर कथकली डांस करने लगी।

ii) सोनाबाई लेखक से पेड़े की माँग क्यों करने लगी?

उत्तर : सोनाबाई के अनुसार दवाई की शीशी का टूटना बीमारी ठीक होने का शुभ-संकेत है इसलिए उसकी छोटी बेटी के हाथ से दवा की शीशी टूटने के कारण वह लेखक से पेड़े की माँग करने लगी।

3) (i) निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए। [1]

भूलना, पीसना

उत्तर :

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
भूलना	भुलाना	भुलवाना
पीसना	पिसाना	पिसवाना

(ii) 'भतीजा' शब्द का स्त्रीलिंग शब्द लिखें। [1]

उत्तर : भतीजा - भतीजी

4) मरीज से मिलने जाते समय कौन-कौन-सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए?[2]

उत्तर : मरीज से मिलने जाते समय सर्वप्रथम हमें उसके आराम में खलल न पड़े इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए इसलिए अस्पताल के नियत किये गए समय पर ही हमें उससे मिलने जाना चाहिए। मरीज को उसकी बीमारी से संबंधित अनावश्यक सुझावों से परेशान नहीं करना चाहिए। मरीज से संक्षिप्त बातचीत करना चाहिए और जल्द-से जल्द अस्पताल से निकल जाना चाहिए। जहाँ तक हो सके छोटे बच्चों को अस्पताल में नहीं ले जाना चाहिए। मरीज के सामने नकारात्मक बातों की अपेक्षा उसका उत्साह बढ़ाने वाली बातों को करना चाहिए।

(इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर सूचनानुसार के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [4]

1) संजाल पूर्ण कीजिए। [2]

i)

परिश्रम

↑

इनका बड़ा गहरा संबंध है

↓

सफलता

ii)

निकम्मा

↑

परिश्रम की उपेक्षा मनुष्य को

↓

असफल

परिश्रम व सफलता का आपस में बड़ा गहरा संबंध है। हमें तभी सफलता मिलती है जब हम परिश्रम करते हैं। परिश्रम से मनुष्य सदैव मेहनती बना रहता है, परिश्रम जीवन को गति प्रदान करता है। यह मनुष्य के जीवन में बहुत ही महत्त्व रखता है। परिश्रम की उपेक्षा मनुष्य को निकम्मा व असफल बना देती है। परिश्रम समस्त कठिनाइयों से निकालने में समर्थ होता है। परिश्रमी मनुष्य भाग्य के भरोसे नहीं बैठे रहते हैं। परिश्रम के दम पर कई महान विभूतियों ने अंसभव कार्यों को संभव कर दिखाया है। जिस देश में लोग परिश्रम करते हैं, वह देश उन्नति, विकास, समृद्धि और सफलता के शिखर पर खड़ा रहता है।

2) परिश्रम इस विषय पर 8-10 पंक्तियों लिखिए: [2]

उत्तर : परिश्रम का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। मनुष्य परिश्रम के द्वारा कठिन से कठिन कार्य सिद्ध कर सकता है। परिश्रम अर्थात् मेहनत के ही द्वारा मनुष्य अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। हर मानव की कुछ इच्छाएँ व आवश्यकताएँ होती हैं। वह सुख शान्ति की कामना करता है, दुनिया में नाम की इच्छा रखता है। किन्तु कल्पना से ही सब कार्य सिद्ध नहीं हो जाते, उसके लिये हमें कठिन परिश्रम का सहारा लेना पड़ता है।

विभाग 2 : पद्य [12]

प्रश्न 2.

(अ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [6]

1) संजाल पूर्ण कीजिए: [2]

कृष्ण को पाने के लिए मीरा ने यह किया है
- परिवार की मर्यादा का त्याग
- समाज की लोक लाज का त्याग
- संतों के साथ कृष्ण का नाप जपना
- लोई और बनमाला को धारण करना

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई॥।
छाँड़ि दी कुल की कानि कहा करिहै कोई।
संतन ढिंग बैठि-बैठि लोक लाज खोई॥
चुनरी के किये टूक ओढ़ लीन्ही लोई।
मोती मूँगे उतार बनमाला पोई॥
अँसुवन जल सींचि सींचि प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई आणँद फल होई॥
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई।
माखन जब काढ़ि लियो छाछा पिये कोई॥
भगत देख राजी हुई जगत देखि रोई।
दासी "मीरा" लाल गिरिधर तारो अब मोही॥

2) (i) रिक्त स्थानों में उचित कारक चिह्न का प्रयोग करें। [1]

- अध्यापक छात्र को पीटता है।
- बच्चे गेंद से खेल रहे हैं।

(ii) 'चलन' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय पहचानिए: [1]

उत्तर : प्रत्यय - 'अन'

3) प्रस्तुत पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों का भावार्थ सरल हिंदी में लिखिए। [2]

उत्तर : प्रस्तुत कविता में मीरा ने श्रीकृष्ण को अपना पति मानते हुए कहती है कि उन्होंने कृष्ण के प्रेम रूपी दूध को अपनी भक्ति की मथानी से बिलोकर दही से सार तत्व अर्थात् घी को निकाल लिया है और छाछ रूपी सारहीन तत्व को छोड़ दिया है। वे कहती है कि प्रभु के भक्त को देखकर वह खुश होती है और संसार को मोह माया में लिप्त देखकर रोती है। वे स्वयं को कृष्ण की दासी बताते हुए कृष्ण को अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती है।

(आ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [6]

1) संजाल पूर्ण कीजिए: (2)

सुमन अपनी गंध नहीं बेचेगा

1. सारे सुमन बिकने पर भी
2. उपवन के बिकने पर भी
3. सौ फागुन के बिकने पर भी

चाहे सभी सुमन बिक जाएँ
चाहे ये उपवन बिक जाएँ

चाहे सौ फागुन बिक जाएँ
पर मैं गंध नहीं बेचूँगा- अपनी गंध नहीं बेचूँगा
जिस डाली ने गोद खिलाया जिस कोंपल ने दी अरुणाई
लक्षमन जैसी चौकी देकर जिन काँटों ने जान बचाई
इनको पहिला हक आता है चाहे मुझको नोचें तोडें
चाहे जिस मालिन से मेरी पँखुरियों के रिश्ते जोडें
ओ मुझ पर मँडरानेवालों
मेरा मोल लगानेवालों
जो मेरा संस्कार बन गई वो सौगंध नहीं बेचूँगा
अपनी गंध नहीं बेचूँगा- चाहे सभी सुमन बिक जाएँ।

2) (i) 'मोल' और 'सुमन' शब्द का समान अर्थ लिखें। [1]

उत्तर : मोल = कीमत, मूल्य

सुमन = पुष्प, कुसुम

(ii) निम्नलिखित वाक्यों में सहायक क्रियाओं को रेखांकित कीजिए। [1]

- उन्होंने पुस्तक <u>लौटा दी</u>।
- वे पुस्तक पकड़े न <u>रख सके</u>।

3) प्रस्तुत पद्यांश की पहली चार पंक्तियों का भावार्थ सरल हिंदी में लिखिए। [2]

उत्तर : प्रस्तुत कविता में कवि ने फूल के स्वभाव की विशेषताएँ बताते हुए कहा है कि किसी भी परिस्थिति में फूल अपनी गंध नहीं बेचता है। फूल इतना स्वाभिमानी है कि सारे

सुमन,उपवन और सौ फागुनों के बिक जाने पर भी वह अपनी गंध को नहीं बेचेगा।

विभाग : पूरक पठन **[8]**

प्रश्न 3.

(अ) परिच्छेद पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [4]

1. संजाल पूर्ण कीजिए: [2]

बच्चों के काकी को सताने के तरीके
1. काकी को चुटकी काटकर भाग जाना
2. काकी पर पानी की कुल्ली करना

बुद्धिराम को कभी-कभी अपने अत्याचार का खेद होता था। विचारते कि इसी संपत्ति के कारण मैं इस समय भलामानुष बना बैठा हूँ। लड़कों को बुड्ढों से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है और फिर जब माता-पिता का यह रंग देखते तो वे बूढी काकी को और सताया करते। कोई चुटकी काटकर भागता, कोई उन पर पानी की कुल्ली कर देता। काकी चीख मारकर रोती। हाँ, काकी क्रोधातुर होकर बच्चों को गालियाँ देने लगतीं तो रूपा घटनास्थल पर आ पहुँचती। इस भय से काकी अपनी जिह्वा कृपाण का कदाचित ही प्रयोग करती थीं।

2. बुजुर्ग आदर-सम्मान के पात्र होते हैं इस पर अपने विचार व्यक्त करें। [2]

उत्तर : बुजुर्ग अर्थात् घर के बड़े-बूढे वे दादा-दादी, नाना-नानी, बुआ, काका, मामा, ताई आदि किसी भी रूप में हो सकते हैं। ये वे सदस्य होते हैं, जिनके पास अनुभव का विस्तृत भंडार होता है और उसे ये बाँटने के लिए भी हमेशा तत्पर होते हैं। इनके पास करीब-करीब मानवीय जीवन से जुड़ी हर समस्या का समाधान होता है। बदले में ये केवल हमसे आदर-भाव की अपेक्षा रखते हैं। जीवन में यदि हम

सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें अपने बुजर्गों के संचित ज्ञान और अनुभव के निचोड़ से प्राप्त ज्ञान को अपनाना चाहिए।

(आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [4]

सितारे छिपे
बादलों की ओट में
सूना आकाश।
तुमने दिए
जिन गीतों को स्वर
हुए अमर।
सागर में भी
रहकर मछली
प्यासी ही रही।

1. तालिका पूर्ण कीजिए: [2]

	स्थिति	निवास स्थान
मछली	प्यासी	सागर
सितारे	बादलों की ओट में छिपे हुए	आकाश

2. 'रात में सितारे आकाश की शोभा बढ़ाते है' अपने विचार लिखिए। [2]

उत्तर : आकाश भी हमारी प्रकृति का अंग है। यदि आप आकाश की ओर निहारें तो उसमें बनने वाले रंग-बिरंगे चित्रों को देखकर सब कुछ भूल जाएँ। पृथ्वी की तरह आकाश का भी अपना परिवार है। सूर्य है चमकता-दमकता, तो शांत है चंद्रमा। ग्रह हैं, नक्षत्र हैं, आकाश गंगा है, दिशाएँ हैं। इन सबके बावजूद रात में यदि आकाश की

शोभा कोई बढ़ाता है तो वे हैं इसमें टिमटिमाने वाले तारे। रात में आकाश में टिमटिमाने वाले तारे न केवल उसकी शोभा बढ़ाते है बल्कि आकाश का सूनापन भी भर देते हैं। रात के अँधेरे में झिलमिलाते तारों को देखने का अलग ही सुख है ये तारे अँधेरे से लड़ते हुए अपनी रोशनी बिखेरते है अपना अस्तित्व बनाते है साथ ही कितने राहगीरों को राह दिखाते है और रात में आसमान की शोभा बढ़ाते है।

विभाग 4 : व्याकरण [14]

प्रश्न 4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

(i) अधोरेखांकित शब्द का शब्द भेद लिखिए: [1]

- सीमा विद्यालय जा रही है।

उत्तर : संज्ञा

(ii) निम्नलिखित अव्यय शब्दों में से किसी एक शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए। [1]

- या- आप ठंडा लेगें या गरम।
- के बिना- धन के बिना सुख नहीं मिलता।

(iii) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द का संधि विच्छेद करें। [1]

- नद्यर्पण - नदी + अर्पण
- देव्यागमन - देव + आगमन

(iv) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य के सहायक क्रिया को पहचानिए और उसका मूल रूप भी लिखें। [1]

- रमा चुपचाप घर जाने लगी।

  उत्तर : लगी - लगना

- राधा दूध लाई।

  उत्तर : लाई - लाना

(v) निम्नलिखित प्रेरणार्थक क्रियाओं में से किन्हीं एक के प्रथम और द्वितीय रूप लिखें। [1]

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
सुनना	सुनाना	सुनवाना
जागना	जगाना	जगवाना

(vi) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए। [1]

मौका मिलते ही जेबकतरे ने यात्री के पर्स को गायब कर दिया।

(हाथ साफ़ कर दिया, चोरी कर दिया)

उत्तर : मौका मिलते ही जेबकतरे ने यात्री के पर्स पर हाथ साफ़ कर दिया।

(vii) निम्नलिखित वाक्यों में कारक पहचानकर उसका भेद भी लिखें। [1]

- बालक ठंड से काँप रहा था।

  उत्तर : से - करण कारक

- माँ ने बालक को समझाया।

  उत्तर : को - कर्म कारक

(viii) निम्नलिखित वाक्य में उचित विरामचिह्न का प्रयोग करें। [1]

- वाह कितना सुंदर बगीचा है

  उत्तर : वाह! कितना सुंदर बगीचा है।

(ix) निम्नलिखित वाक्यों में किन्हीं दो के काल परिवर्तन कीजिए। [2]

- बढ़ई कुर्सियाँ बनाता था। (अपूर्ण वर्तमानकाल)

  उत्तर : बढ़ई कुर्सियाँ बना रहा है।

- माली पौधों को पानी देगा। (सामान्य वर्तमानकाल

  उत्तर : माली पौधों को पानी देता है।

- मोहन आता है। (सामान्य भूतकाल)

  उत्तर : मोहन आया।

(x) रचना के आधार पर वाक्य का भेद बताएँ। [1]

- देश की खातिर शहीदों ने अपनी जान की बाजी लगा दी।

  उत्तर : सरल वाक्य

(xi) अर्थ के आधार पर वाक्य परिवर्तन कीजिए। [1]

- माँ रोटी बनाओ (विधानवाचक वाक्य)

  उत्तर : माँ रोटी बनाती है।

(xii) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए। [2]

- मयने भारत को प्रेम किया है।

  उत्तर : <u>मैंने</u> भारत <u>से</u> प्रेम किया है।

- उसने अनेकों ग्रंथ लिखे।

  उत्तर: उसने <u>अनेक</u> ग्रंथ लिखे।

विभाग 5 : रचना विभाग [26]

सूचना : आवश्यकतानुसार परिच्छेद में लेखन अपेक्षित है।

प्रश्न 5. (1) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए: [5]

दसवीं में पढ़ने वाली/वाला सुधा/सुधाकर देसाई, 20 विदयानगर, कुडाळ से स्वास्थ्य अधिकारी, महानगरपालिका, कुडाळ को शहर में अशुद्ध जलापूर्ति होने के उपलक्ष्य में ध्यान आकर्षित करते हुए पत्र लिखती/लिखता है।

दिनाँक : 14 जून 20xx

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

महानगरपालिका,

कुडाळ।

विषय - अशुद्ध जलापूर्ति के संदर्भ में शिकायती पत्र।

महोदय,

मैं आपका ध्यान हमारे मुहल्ले में हो रही अशुद्ध जलापूर्ति के संदर्भ में आकर्षित करना चाहता हूँ। पिछले सप्ताह से गंदा और मटमैला पानी आ रहा है। इस पानी के साथ कीटाणु भी देखे गए हैं। मोहल्ले के कई लोग उल्टी और दस्त से पीड़ित हैं समय रहते यदि उचित कदम नहीं उठाए गए तो समस्या अति गंभीर हो सकती है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि आप शीघ्र ही इस ओर ध्यान दें और हमें इस समस्या से छुटकारा दिलाए।

इसके लिए मैं आपका अति आभारी रहूँगा।

कष्ट के लिए क्षमा।

धन्यवाद।

भवदीय,

सुधाकर देसाई,

20, विदयानगर, कुड़ाल।

ई-मेल आईडी: pqr@abc.com

	टिकट
	प्रति, स्वास्थ्य अधिकारी, महानगरपालिका, कुडाळ।
प्रेषक, सुधाकर देसाई, 20, विदयानगर, कुड़ाल। ई-मेल आईडी: pqr@abc.com	

अथवा

अपनी छोटी बहन/भाई दीक्षा/दीक्षित वनमाली, वैशाली नगर, नागपुर को परीक्षा में नक़ल करते पकड़ी/पकड़ा गई/गया है, उसका दुष्परिणाम बताते हुए उसे हुए पत्र लिखिए।

दिनाँक: 25 सितम्बर 201xx

प्रिय दीक्षा

स्नेहाशीष।

कल ही पिताजी का पत्र मिला पढ़कर तो जैसे मेरे ऊपर तुषारापात ही हो गया कि तुम परीक्षा में नक़ल करते पकड़ी गई हो। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा है कि हमारी दीक्षा भी ऐसा काम कर सकती है। बहन यह ऐसा दाग है जो मिटाए नहीं मिटता, परन्तु अब जो हो गया सो हो गया

पिछली बातों को भूल कर नहीं शुरुआत करो तथा मन भटकाने वाले मित्रों से दूर रहो ।

आशा करता हूँ कि तुम इस गलती से सबक लेकर अपने लक्ष्य पर ध्यान केद्रित करोगी। अपना ख्याल रखना।

तुम्हारा अग्रज

मोहित वनमाली

सेंट थॉमस छात्रावास

कमरा 234

पुणे

इ-मेल आईडी: pqr@abc.com

टिकट

प्रति,

दीक्षा वनमाली

भवानी मंडप,

नागपुर।

प्रेषक,

मोहित वनमाली

सेंट थॉमस छात्रावास

कमरा 234

पुणे

इ-मेल आईडी: pqr@abc.com

दिनाँक: 25 सितम्बर 20xx

(2) निम्नलिखित अपठित गदय-खंड पर आकलन हेतु चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों: [4]

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के कारण वह अच्छे-बुरे सभी प्रकार के लोगों के संपर्क में आता है। अच्छे लोगों के साथ उठने-बैठने से मनुष्य में अच्छे गुण तथा बुरे लोगों के साथ रहने से बुरे गुण आते हैं। इस प्रकार मनुष्य पर संगति का प्रभाव पड़ता है। शराब बेचने वाले के कलश में यदि दूध भी हो तो लोग उसे शराब ही समझते हैं। मनुष्य जैसे लोगों के साथ बैठता है, वैसा ही प्रभाव ग्रहण करता है। दुर्जन और साधु के घर पले तोते संगति के महत्त्व को स्पष्ट कर देते हैं। साधु के घर पला तोता राम-राम तथा भजन बोलता है, जबकि दुर्जन के घर पला तोता सदा गालियाँ ही देता रहता था। सत्संग के सागर में वचनों के मोती हैं। सत्संग के बिना मनुष्य को विवेक प्राप्त नहीं होता। जिस मनुष्य में विवेक नहीं, उसमें और पशु में कोई अंतर दिखाई नहीं देता। अतः मनुष्य को कुसंगति से दूर रहने तथा सत्संगति प्राप्त करते रहना चाहिए।

1. मनुष्य को किस प्रकार का प्राणी कहा गया है?
2. मनुष्य पर किसका प्रभाव पड़ता है?
3. सत्संग के बिना मनुष्य क्या नहीं प्राप्त कर सकता?
4. मनुष्य को क्या करते रहना चाहिए?

(3) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 70-80 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक और सीख भी दीजिए: [5]

किसी गाँव में अकाल----------दयालु जमींदार द्वारा लोगों को रोटियाँ बाँटना--------रोटियों में एक छोटी रोटी--------किसी का छोटी रोटी न लेना --------एक बालिका का छोटी रोटी लेना--------घर जाकर रोटी तोड़ना --------रोटी में से सोने का सिक्का निकलना----------लड़की का जमींदार के पास जाकर सिक्का लौटाना----------इनाम पाना---- सीख।

ईमानदार रमा

एक बार महाराष्ट्र के खेड़ गाँव में भीषण अकाल पड़ा। गाँव में चारों और खाने के लाले पड़ गए। वहाँ के जमींदार ठाकुर बलभद्र बड़े ही दयालु जमींदार थे। उनसे लोगों का कष्ट देखा न गया वे रोज सुबह गाँव के लोगों में रोटियाँ बँटवाते थे। एक दिन बँटनेवाली रोटी में एक छोटी रोटी थी। उस छोटी रोटी को कोई नहीं उठा रहा था। एक छोटी बालिका रमा वहाँ आई और उसने वह छोटी रोटी को उठा ली और अपने घर चली गई। घर में जब उस बालिका ने उस रोटी को तोड़ा तो उसमें से सोने का एक सिक्का निकला। रमा तुरंत भागते हुए जमींदार ठाकुर बलभद्र के पास पहुँचती है और उन्हें वह सिक्का लौटा देती है। यह देखकर जमींदार ठाकुर बलभद्र बड़े प्रसन्न होते हैं और रमा को उसकी ईमानदारी के लिए वह सिक्का इनाम में देते हैं।

सीख : ईमानदारी का फल हमेशा ही सुखद होता है।

अथवा

वृत्तांत लेखन

रोहतक विद्यालय में अंध छात्रों द्वारा बनाई गई राखी प्रदर्शनी का लगभग 70-80 शब्दों में वृत्तांत लेखन कीजिए। [वृत्तांत लेखन में स्थान, समय घटना का उल्लेख आवश्यक है।]

रोहतक विद्यालय में राखी प्रदर्शनी

30 जुलाई 20xx को रोहतक विद्यालय में राखी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन शहर कल्याण मंत्री रामाराव ने किया। प्रदर्शनी में विभिन्न आकार-प्रकार, रंग और डिजाईन की राखियाँ प्रदर्शित की गई थी। सभी राखियाँ इतनी सुंदर थी कि कहीं से भी ऐसा नहीं लग रहा था कि वे अंधें बच्चों द्वारा बनाई गई थी। सुंदर राखियों को देखकर सभी उन बच्चों की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। शहर कल्याण मंत्री

रामाराव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में उन बच्चों की दिल खोलकर तारीफ़ की और अपने विभाग की ओर से ऐसे बच्चों को मुख्यधारा में लाने के लिए अपनी ओर से निधि और हरसंभव सहायता की भी घोषणा की। इस प्रकार इस प्रदर्शनी को आम नागरिकों का अच्छा प्रतिसाद मिला।

(4) निम्नलिखित जानकारियों के आधार पर विज्ञापन का प्रारूप 50-60 शब्दों में तैयार कीजिए। [5]

चमक केश तेल	क्या आप अपने बालों से परेशान हैं

मेडिकल दुकानों में उपलब्ध

जानदार बाल

क्या आप अपने बेजान बालों से शर्मिंदा हैं...???

तो आजमाइए...

चमक केश तेल

सभी प्रमुख मेडिकल दुकानों में उपलब्ध

(5) किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में निबंध लिखिए। [7]

किसान की आत्मकथा

हम किसान हर देश का आधार स्तंभ होते हैं। त्याग और तपस्या का दूसरा नाम है- 'किसान'। हम पर ही देश की आर्थिक व्यवस्था टिकी होती है। विश्व का समस्त आनन्द, ऐश्वर्य और वैभव हमारे कारण ही आप सब भोग पाते हैं। एक देश के प्रत्येक व्यक्ति का जीवन किसानों पर निर्भर करता है।

हम किसान सेवा, त्याग व परिश्रम की सजीव मूर्ति हैं। हमारी सरलता, शारीरिक दुर्बलता, सादगी एवं गरीबी हमारे सात्विक जीवन को प्रकट करती है। हम स्वयं न खाकर दूसरों को खिलाते हैं। हम स्वयं न पहनकर संसार की ज़रूरतों को पूरा करते हैं। परन्तु हम किसान खुद अपनी जमीन के मालिक नहीं

हैं, इसके कारण हमें हर तरह के शोषण का सामना करना पड़ता है। साहूकारों के हाथों का खिलौना बनना किसानों की मजबूरी है। किसान यदि ट्रैक्टर, जनरेटर, खरीदने, पशु खरीदने या किसी अन्य वजहों से बैंकों से कर्ज लेना चाहे तो उसके लिए इतनी लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है कि किसानों को साहूकारों से अधिक सूद अदा करने की कीमत पर कर्ज लेना ज्यादा मुनासिब लगता है। किसानों को आत्मनिर्भर बनाने और उनका आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए यह जरूरी है कि गाँवों में बुनियादी सुविधाएँ सुनिश्चित की जाएँ। गाँवों में बिजली पहुँचे, सड़क बने, सिंचाई की सुविधाएँ बढ़ें तो किसानों को खेती करना आसान रहेगा। किसान समाज का सच्चा हितैषी है। यदि वह सुखी है, तो पूरा देश सुखी बन सकता है क्योंकि किसानों की खुशहाली उन्नति व समृद्धि में पूरे देश की समृद्ध, उन्नति, खुशहाली छिपी है।

मनोरंजन के आधुनिक साधन

जिस प्रकार मनुष्य को शरीर के लिए हवा, पानी भोजन जैसी मूलभूत वस्तुओं की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मनुष्य को अपने मन को स्वस्थ रखने के लिए मनोरंजन की आवश्यकता होती है। आदिकाल से ही मनुष्य अपने मनोरंजन के भिन्न-भिन्न साधन खोजता रहा है। पहले मनुष्य मनोरंजन के लिए गीत-संगीत, नौटंकी, खेल, सर्कस, यात्रा आदि का सहारा लिया करता था। समय के परिवर्तन से भी मनोरंजन के साधनों में बदलाव आया है। आज वैज्ञानिक युग में मनुष्य के लिए मनोरंजन के साधनों की कोई कमी नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति की रूचि भिन्न प्रकार की होती है। अंत: वह अपनी रूचि के अनुसार ही मनोरंजन के साधनों की खोज करता रहता है आज मनुष्य के लिए घर और बाहर दोनों ही जगह मनोरंजन के अत्याधुनिक साधन उपलब्ध है। आज क्रिकेट, फूटबॉल, टेनिस, बॉलीबाल, बैटमिंटन, तैराकी, घुड़सवारी आदि न जाने कितने ही खेलों से न केवल अपना मनोरंजन कर सकते और साथ ही अपने सेहत को भी अच्छा रख सकते हैं।

घर बैठकर भी वो शतरंज, कैरम अदि खेलकर अपना मनोरंजन कर सकता है और आज जैसे इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध होने से तो घर बैठकर ही अनेक मनोरंजक खेल खेल सकते हैं और कुछ खेल तो ऐसे है जहाँ आप अपने घरों में ही बैठे रहते हैं परन्तु आप ऑनलाइन ग्रुप सदस्य बनाकर एक साथ मिलकर भी कई खेल खेल सकते हैं। इस प्रकार से यदि देखा जाए तो सूचना क्रान्ति के आने से आज मनोरंजन के अनेक साधन सहज और सरल रूप से हमारे लिए उपलब्ध हैं।

'जीवन में गुरु का महत्त्व'

गुरुब्रह्मा गुरुविर्ष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।

गुरु की महिमा का पूरा वर्णन वास्तव में कोई नहीं कर सकता। क्योंकि गुरु की महिमा तो ईश्वर से भी कहीं अधिक है। गुरु को ईश्वर का दर्जा प्राप्त है।

गुरु के महत्त्व पर तुलसीदास ने भी रामचरितमानस में लिखा है -

गुर बिनु भवनिधि तरइ न कोई।
जों बिरंचि संकर सम होई।।

भले ही कोई ब्रह्मा, शंकर के समान क्यों न हो, वह गुरु के बिना भव सागर पार नहीं कर सकता। धरती के आरंभ से ही गुरु की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला गया है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों, रामायण, गीता, गुरुग्रन्थ साहिब आदि सभी धर्मग्रन्थों एवं सभी महान संतों द्वारा गुरु की महिमा का गुणगान किया गया है। गुरु और भगवान में कोई अंतर नहीं है। संस्कृत के शब्द गु का अर्थ है अन्धकार, रु का अर्थ है उस अंधकार को मिटाने वाला। आत्मबल को जगाने का काम गुरु ही करता है। गुरु अपने आत्मबल द्वारा शिष्य में ऐसी प्रेरणाएँ भरता है, जिससे कि वह अच्छे

मार्ग पर चल सके। हमारे सभ्य सामाजिक जीवन का आधार स्तंभ गुरू हैं। कई ऐसे गुरू हुए हैं, जिन्होंने अपने शिष्य को इस तरह शिक्षित किया कि उनके शिष्यों ने राष्ट्र की धारा को ही बदल दिया। आध्यात्मिक शांति, धार्मिक ज्ञान और सांसारिक निर्वाह सभी के लिए गुरू का दिशा निर्देश बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। गुरु केवल एक शिक्षक ही नहीं है, अपितु वह व्यक्ति को जीवन के हर संकट से बाहर निकलने का मार्ग बताने वाला मार्गदर्शक भी है। गुरु का दर्जा भगवान के बराबर माना जाता है क्योंकि गुरु, व्यक्ति और सर्वशक्तिमान के बीच एक कड़ी का काम करता है। जीवन में गुरू के महत्त्व का वर्णन कबीर दास जी ने अपने दोहों में पूरी आत्मीयता से किया है।

गुरू गोविन्द दोऊ खडे का के लागु पाँव,
बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।

आज के आधुनिक युग में भी गुरु की महत्ता में जरा भी कमी नहीं आयी है। एक बेहतर भविष्य के निर्माण हेतु आज भी गुरु का विशेष योगदान आवश्यक होता है।